HUSAINI DOOLHA (HINDI)

हुसैनी दूल्हा

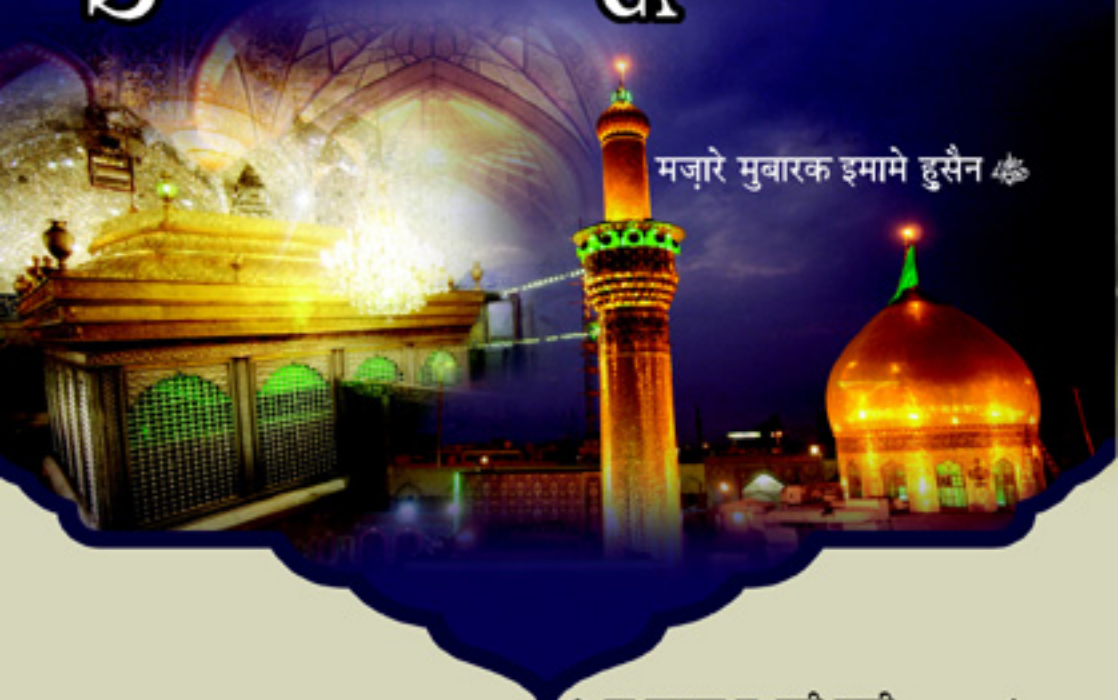

- बा कमाल म-दनी मुन्नी 1
- तीन बहादुर भाई 9
- राहते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

हुसैनी दूल्हा

येह रिसाला (**हुसैनी दूल्हा**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

हुसैनी दूल्हा[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए 16 सफ़ह़ात का येह बयान मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल मे म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।

बा कमाल म-दनी मुन्नी

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं सफ़र पर था, एक मक़ाम पर नमाज़ का वक़्त हो गया, वहां कूंआं तो था मगर डोल और रस्सी नदारद (या'नी ग़ाइब) मैं इसी फ़िक्र में था कि एक मकान के ऊपर से एक **म-दनी मुन्नी** ने झांका और पूछा : आप क्या तलाश कर रहे हैं ? मैं ने कहा, बेटी ! रस्सी और डोल । उस ने पूछा, आप का नाम ? फ़रमाया, **मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली ।** म-दनी मुन्नी ने ह़ैरत से कहा : अच्छा आप ही हैं जिन की शोहरत के डंके बज रहे हैं और ह़ाल येह है कि कूंएं से पानी भी नहीं निकाल सकते ! येह कह कर उस ने कूंएं में थूक दिया । कमाल हो गया ! आनन फ़ानन पानी ऊपर आ गया और कूंएं से छलकने लगा । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने वुज़ू से फ़राग़त के बा'द उस **बा कमाल म-दनी मुन्नी** से फ़रमाया : बेटी ! सच बताओ तुम ने येह कमाल किस त़रह़ ह़ासिल किया ? कहने लगी : "मैं

---

1. येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के कराची में सिन्ध सत़्ह़ पर होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ सिने 1420 हि. में फ़रमाया था । जो ज़रूरी तरमीम के साथ ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

दुरूदे पाक पढ़ती हूं, इसी की ब-र-कत से येह करम हुवा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस **बा कमाल म-दनी मुन्नी** से **मु-तअस्सिर** हो कर मैं ने वहीं अ़हद किया कि मैं दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ किताब लिखूंगा। (سعادۃ الدّارین ص ۱۵۹ دارالکتب العلمیة بیروت)

चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दुरूद शरीफ़ के बारे में किताब लिखी जो बेह़द मक़्बूल हुई और उस किताब का नाम है : "**दलाइलुल ख़ैरात**"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी पिछले दिनों हम ने करबला के अ़ज़ीम शहीदों عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की याद मनाई है। आइये ! मैं आप को करबला के **हुसैनी दूल्हा** की दर्द अगेंज़ दास्तान सुनाऊं। चुनान्चे **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى अपनी मश्हूर किताब "सवानेहे करबला" में नक़्ल करते हैं :

हुसैनी दूल्हा

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब इब्ने **अ़ब्दुल्लाह** कलबी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ क़बीलए बनी कल्ब के नेक ख़ू और ख़ूबरू जवान थे, उ़नफ़ुवाने शबाब, उमंगों का वक़्त और बहारों के दिन थे। सिर्फ़ सत्तरह17 रोज़ शादी को हुए थे और अभी बिसाते़ इ़श्रतो नशात़ गर्म ही थी कि **वालिदए माजिदह** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا तश्रीफ़ लाईं जो एक बेवा ख़ातून थीं और जिन की सारी कमाई और घर का चराग़ येही एक नौ जवान बेटा था। मादरे मुश्फ़िक़ा ने रोना शुरूअ़ कर दिया। बेटा ह़ैरत में आ कर मां से पूछता है : **प्यारी मां !** रन्जो मलाल का सबब क्या है ? मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं ने अपनी उ़म्र में कभी आप की ना फ़रमानी की हो, न आइन्दा ऐसी जुरअत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

कर सकता हूं । आप की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी मुझ पर फ़र्ज़ है और मैं اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ताबह ज़िन्दगी मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार ही रहूंगा । मां ! आप के दिल को क्या सदमा पहुंचा और आप को किस ग़म ने रुलाया ? मेरी प्यारी मां, मैं आप के हुक्म पर जान भी फ़िदा करने को तय्यार हूं आप ग़मगीन न हों ।

सआ़दत मन्द इक्लौते बेटे की येह सआ़दत मन्दाना गुफ़्त-गू सुन कर मां और भी चीख़ मार कर रोने लगी और कहने लगी : ऐ फ़रज़न्दे दिलबन्द ! तू मेरी आंख का नूर, मेरे दिल का सुरूर है ऐ मेरे घर के रोशन चराग़ और मेरे बाग़ के महक्ते फूल ! मैं ने अपनी जान घुला घुला कर तेरी जवानी की बहार पाई है । तू ही मेरे दिल का क़रार और मेरी जान का चैन है । एक पल तेरी जुदाई और एक लम्ह़ा तेरा फ़िराक़ मुझ से बरदाश्त नहीं हो सकता ।

چُو دَر خَواب بـاشَم تُوئی دَر خَیالَم

چُو بَیدار گَردَم تُوئی دَر ضَمِیرَم

(या'नी जब सोऊं तो मेरे ख़्वाबों और ख़यालों में भी तू
और जब जागूं तो मेरे दिल की यादों में भी तू)

ऐ जाने मादर ! मैं ने तुझे अपना ख़ूने जिगर पिलाया है । आज इस वक़्त दश्ते करबला में नवासए मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, मौला मुश्किल कुशा का लाल, ख़ातूने जन्नत का नौ निहाल, शहज़ादए ख़ुश ख़िसाल ज़ुल्मो सितम से निढाल है । मेरे लाल ! क्या तुझ से हो सकता है कि तू अपनी जान उस के क़दमों पर क़ुरबान कर डाले ! उस बे ग़ैरत ज़िन्दगी पर हज़ार तुफ़ है कि हम ज़िन्दा रहे और सुल्त़ाने **मदीनए मुनव्वरह,** शहन्शाहे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का लाडला

शहज़ादा ज़ुल्मो जफ़ा के साथ शहीद कर दिया जाए। अगर तुझे मेरी **महब्बतें** कुछ याद हों और तेरी परवरिश में जो **मशक़्क़तें** मैं ने उठाई हैं उन को तू भूला न हो तो ऐ मेरे चमन के महक्ते फूल ! तू प्यारे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सर पर सदक़े हो जा। **हुसैनी दूल्हा** सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ऐ मादरे मेहरबान, ख़ूबिये नसीब, येह जान शहज़ादा हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर कुरबान हो मैं दिलो जान से आमादा हूं, एक लम्हे की इजाज़त चाहता हूं ताकि उस बीबी से दो बातें कर लूं जिस ने अपनी ज़िन्दगी के ऐशो राहत का सेहरा मेरे सर पर बांधा है और जिस के अरमान मेरे सिवा किसी की त़रफ़ नज़र उठा कर नहीं देखते। उस की ह़सरतों के तड़पने का ख़याल है, अगर वोह चाहे तो मैं उस को इजाज़त दे दूं कि वोह अपनी ज़िन्दगी को जिस त़रह़ चाहे गुज़ारे। मां ने कहा : बेटा ! औ़रतें **नाक़िसुल अ़क़्ल** होती हैं, मबादा तू उस की बातों में आ जाए और येह सआ़दते सर-मदी तेरे हाथों से जाती रहे।

हुसैनी दूल्हा सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : प्यारी मां, **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **महब्बत** की गिरेह दिल में ऐसी मज़बूत़ लगी है कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस को कोई खोल नहीं सकता और उन की जां निसारी का नक़्श दिल पर इस त़रह़ कन्दा है जो दुन्या के किसी भी पानी से नहीं धोया जा सकता। येह कह कर बीबी की त़रफ़ आए और उसे ख़बर दी कि फ़रज़न्दे रसूल, इब्ने फ़ातिमा बतूल, गुलशने मौला अ़ली के महक्ते फूल मैदाने करबला में रन्जीदा व मलूल हैं। ग़द्दारों ने उन पर नर्ग़ा किया है। मेरी तमन्ना है कि उन पर जान कुरबान करूं। येह सुन कर **नई दुल्हन** ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और कहने लगी : **ऐ मेरे सर के ताज !** अफ़्सोस कि मैं इस जंग में आप का साथ नहीं दे

सकती। शरीअ़ते इस्लामिय्या ने औ़रतों को लड़ने के लिये मैदान में आने की इजाज़त नहीं दी। अफ़्सोस ! इस सआ़दत में मेरा ह़िस्सा नहीं कि तेरे साथ मैं भी दुश्मनों से लड़ कर इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर अपनी जान कुरबान करूं। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप ने तो जन्नती च-मनिस्तान का इरादा कर लिया वहां हूरें आप की ख़िदमत की आरज़ू मन्द होंगी। बस एक करम फ़रमा दें कि जब सरदाराने अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ जन्नत में आप के लिये ने'मतें ह़ाज़िर की जाएंगी और जन्नती हूरें आप की ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर होंगी, उस वक़्त आप मुझे भी हमराह रखेंगे।

हुसैनी दूल्हा अपनी उस नेक दुल्हन और बरगुज़ीदा मां को ले कर फ़रज़न्दे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। दुल्हन ने अ़र्ज़ की : ऐ इब्ने रसूल ! शु-हदा घोड़े से ज़मीन पर गिरते ही हूरों की गोद में पहुंचते हैं और ग़िल्माने जन्नत कमाले इत़ाअ़त शिआ़री के साथ उन की ख़िदमत करते हैं। ''येह'' हुज़ूर पर जां निसारी की तमन्ना रखते हैं और मैं निहायत ही बेकस हूं, कोई ऐसे रिश्तेदार भी नहीं जो मेरी ख़बर गीरी कर सकें। **इल्तिजा** येह है कि अ़र्सागाहे मह़शर में मेरी ''इन'' से जुदाई न हो, और दुन्या में मुझ ग़रीब को आप के अहले बैत अपनी कनीज़ों में रखें, और मेरी तमाम उ़म्र आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पाक बीबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ख़िदमत में गुज़र जाए।

ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने येह तमाम अ़हदो पैमां हो गए और सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी अ़र्ज़ कर दी कि या इमामे आ़ली मक़ाम ! अगर हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से मुझे जन्नत मिली तो मैं अ़र्ज़ करूंगा : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह बीबी मेरे साथ रहे। **हुसैनी**

दूल्हा सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इजाज़त ले कर मैदान में चल दिये। येह देख कर लश्करे आ'दा पर लर्ज़ा त़ारी हो गया कि घोड़े पर एक माह रू शह सुवार अ-जले ना गहानी की त़रह़ लश्कर की त़रफ़ बढ़ा चला आ रहा है हाथ में नेज़ा है दोश पर सिपर है और दिल हिला देने वाली आवाज़ के साथ येह रज्ज़ पढ़ता आ रहा है :

اَمِيْـــرٌ حُسَيْـــنٌ وَ نِـــعْـــمَ الْاَ مِيْـــر

لَـــهٗ لَـمْـعَةٌ كَـــا لسِّـــرَاجِ الْمُـنِيْـر

(या'नी ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अमीर हैं और बहुत ही अच्छे अमीर। इन की चमक दमक रोशन चराग़ की त़रह़ है।)

बर्क़े ख़ातिफ़ (या'नी उचक लेने वाली बिजली) की त़रह़ मैदान में पहुंचे, कोह पैकर घोड़े पर सिपह गरी के फ़ुनून दिखाए, सफ़े आ'दा से मुबारिज़ त़लब फ़रमाया, जो सामने आया तलवार से उस का सर उड़ाया। गिर्दो पेश ख़ुदसरों (या'नी सरकशों) के सरों का अम्बार लगा दिया। ना कसों (ना अहलों) के तन ख़ाको ख़ून में तड़पते नज़र आने लगे। यक्बारगी घोड़े की बाग मोड़ दी और मां के पास आ कर अ़र्ज़ की, कि **ऐ मादरे मुश्फ़िक़ा !** तू मुझ से अब तो राज़ी हुई ! और **दुल्हन** के पास पहुंचे जो बे क़रार रो रही थी और उस को **सब्र** की तल्क़ीन की। इतने में आ'दा (या'नी दुश्मनों) की त़रफ़ से आवाज़ आई, هَلْ مِنْ مُّبَارِزٍ؟ या'नी कोई है मुक़ाबले पर आने वाला ? सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ घोड़े पर सुवार हो कर मैदान की त़रफ़ रवाना हुए। नई दुल्हन टिकटिकी बांधे उन को जाता देख रही है और आंखों से आंसूओं के दरिया बहा रही है।

हुसैनी दूल्हा शेरे ज़ियां (या'नी ग़ज़बनाक शेर) की त़रह़ तैग़े आबदार व नेज़ए जां शिकार ले कर मा'रिकए कारज़ार में साइक़ावार आ

पहुंचा । इस वक़्त मैदान में आ'दा की त़रफ़ से एक मश्हूर बहादुर और नामदार सुवार ह़कम बिन तुफ़ैल जो ग़ुरूरे **नबरद** आज़माई में सरशार था तकब्बुर से बल खाता हुवा लपका, सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक ही ह़म्ले में उस को नेज़े पर उठा कर इस त़रह़ ज़मीन पर दे मारा कि हड्डियां चक्ना चूर हो गईं और दोनों लश्करों में शोर मच गया । और मुबारिज़ों में हिम्मते मुक़ाबला न रही । **सय्यिदुना** वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घोड़ा दौड़ाते हुए क़ल्बे दुश्मन पर पहुंचे । जो मुबारिज़ सामने आता उस को नेज़े की नोक पर उठा कर ख़ाक पर पटख़ देते । यहां तक कि नेज़ा पारह पारह हो गया । तलवार मियान से निकाली और तैग़ ज़नों की गरदनें उड़ा कर ख़ाक में मिला दीं । जब आ'दा इस जंग से तंग आ गए तो अ़म्र बिन सा'द ने हुक्म दिया कि सिपाही इस नौ जवान के गिर्द हुजूम कर के ह़म्ला करें और हर त़रफ़ से यक्बारगी टूट पड़ें चुनान्चे ऐसा ही किया गया । जब **हुसैनी दूल्हा** ज़ख़्मों से चूर हो कर ज़मीन पर तश्रीफ़ लाए तो सियाह दिलाने बद बात़िन ने उन का सर काट कर हुसैनी लश्कर की त़रफ़ उछाल दिया । **मां** अपने लख़्ते जिगर के सर को अपने मुंह से मलती थी और केहती थी : **ऐ बेटा,** मेरे बहादुर बेटा ! अब तेरी मां तुझ से राज़ी हुई । फिर वोह सर उस की **दुल्हन** की गोद में ला कर रख दिया । **दुल्हन** ने एक झुरझुरी ली और उसी वक़्त परवाने की त़रह़ उस शम्ए़ जमाल पर क़ुरबान हो गई और उस की रूह़ **हुसैनी दूल्हा** से हम आग़ोश हो गई ।

सुर्ख़ रूई इसे कहते हैं कि राहे ह़क़ में
सर के देने में ज़रा तूने तअम्मुल न किया

اَسْكَنَكُمَا اللّٰهُ فَرَادِيْسَ الْجِنَانِ وَ اَغْرَقَكُمَا فِیْ بِحَارِ الرَّحْمَةِ وَالرِّضْوَانِ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को फ़िरदौस के बाग़ों में जगह

इनायत फ़रमाए और रह़मतो रिज़्वान के दरियाओं में ग़रीक़ करे)

(मुलख़्ख़स अज़ : सवानेहे करबला, स. 141 ता 146 मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत और जज़्बए शहादत भी कैसी अ़ज़ीम ने'मतें हैं सिर्फ़ सत्तरह[17] दिन का दूल्हा मैदाने कारज़ार में दुश्मनों के लश्करे जर्रार से तने तन्हा टकरा गया और जामे शहादत नोश कर के जन्नत का ह़क़दार हो गया। हुसैनी दूल्हा की वालिदए मोह़तरमा और नौ बियाहता दुल्हन पर भी करोड़ों सलाम ! किस क़दर बुलन्द ह़ौसले के साथ मां ने अपने लाल को और दुल्हन ने अपने सुहाग को इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे तिश्नाकाम, इमामे हुमाम सय्यिदुश्शु-हदा, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, बे कसे करबला इमामे हुसैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के क़दमों पर क़ुरबान होते देखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसी बुलन्द रुत्बा ख़ातूनाने इस्लाम के जज़्बए इस्लामी का कोई ज़र्रा हमारी मांओं और बहनों को भी नसीब करे कि वोह भी अपनी औलाद को दीने इस्लाम की ख़ात़िर क़ुरबानियों के लिये पेश करें, उन्हें सुन्नतों के सांचे में ढालें और आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र पर आमादा करें।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो दूर हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

तीन बहादुर भाई

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **उ़यूनुल ह़िकायात** में नक़्ल करते हैं : तीन[3] **शामी** घुड़

सुवार बहादुर नौ जवान भाई इस्लामी लश्कर के साथ जिहाद पर रवाना हुए, लेकिन वोह लश्कर से अलग हो कर चलते और पड़ाव डालते थे। और जब तक कुफ़्फ़ार का लश्कर इन पर ह़म्ले में पहल न करता वोह लड़ाई में ह़िस्सा नहीं लेते थे। एक मर्तबा रूमियों का एक बड़ा लश्कर मुसल्मानों पर ह़म्ला आवर हुवा और कई मुसल्मानों को शहीद और मु-तअ़द्दद को क़ैदी बना लिया। येह भाई आपस में कहने लगे : मुसल्मानों पर एक बहुत बड़ी मुसीबत नाज़िल हो गई है हम पर लाज़िम है कि अपनी जानों की परवाह किये बिग़ैर जंग में कूद पड़ें, येह आगे बढ़े और जो मुसल्मान बाक़ी बचे थे उन से कहने लगे : ''तुम हमारे पीछे हो जाओ और हमें इन से मुक़ाबला करने दो। अगर **अल्लाह** عزوجل ने चाहा तो हम तुम्हारे लिये काफ़ी होंगे। फिर येह **रूमी लश्कर** पर टूट पड़े और रूमियों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। रूमी बादशाह (जो इन तीनों[3] की बहादुरी का मन्ज़र देख रहा था) अपने एक जरनेल से कहने लगा : ''जो इन में से किसी नौ जवान को गरिफ़्तार कर के लाएगा मैं उसे अपना मुक़र्रब और सिपह सालार बना दूंगा।'' रूमी लश्कर ने येह ए'लान सुन कर अपनी जानें लड़ा दीं और आख़िरे कार इन **तीनों[3] भाइयों** को बिग़ैर ज़ख़्मी किये गरिफ़्तार करने में काम्याब हो गए। रूमी बादशाह बोला : इन तीनों से बढ़ कर कोई फ़त्ह़ और माले ग़नीमत नहीं, फिर उस ने अपने लश्कर को रवानगी का हुक्म दे दिया और इन तीनों[3] भाइयों को अपने साथ अपने दारुस्सल्तनत क़ुस्तुन्तुन्या ले आया और बोला : अगर तुम इस्लाम तर्क कर दो तो मैं अपनी बेटियों की शादी तुम से कर दूंगा और आइन्दा बादशाहत भी तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा। इन भाइयों ने ईमान पर साबित क़दमी का मुज़ा-हरा करते हुए उस की येह

पेशकश ठुकरा दी और सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारा और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा किया, (या'नी फ़रियाद की) बादशाह ने अपने दरबारियों से पूछा : येह क्या कह रहे हैं ? दरबारियों ने जवाब दिया : ''येह अपने नबी को पुकार रहे हैं'', बादशाह ने इन भाइयों से कहा : अगर तुम ने मेरी बात न मानी तो मैं तीन[3] देगों में तेल ख़ूब कड़कड़ा कर तीनों को एक एक देग में फिंकवा दूंगा। फिर उस ने तेल की तीन[3] देगें रख कर उन के नीचे तीन[3] दिन तक आग जलाने का हुक्म दिया। हर दिन इन तीन[3] भाइयों को उन देगों के पास लाया जाता और बादशाह अपनी पेशकश उन के सामने रखता कि इस्लाम छोड़ दो तो मैं अपनी बेटियों की शादी भी तुम से कर दूंगा और आइन्दा बादशाहत भी तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा। येह तीनों[3] भाई हर बार ईमान पर साबित क़दम रहे और बादशाह की इस पेशकश को ठुकरा दिया। तीन[3] दिन के बा'द बादशाह ने बड़े भाई को पुकारा और अपना मुत़ा-लबा दोहराया, इस मर्दे मुजाहिद ने इन्कार किया। बादशाह ने धमकी दी मैं तुझे इस देग में फिंकवा दूंगा। लेकिन उस ने फिर भी इन्कार ही किया। **आख़िर बादशाह ने त़ैश में आ कर उसे देग में डालने का हुक्म दिया जैसे ही उस नौ जवान को खौलते हुए तेल में डाला गया, आनन फ़ानन उस का सब गोश्त पोस्त जल गया और उस की हड्डियां ऊपर ज़ाहिर हो गईं,** बादशाह ने दूसरे भाई के साथ भी इसी त़रह़ किया और उसे भी खौलते तेल में फिंकवा दिया। जब बादशाह ने इस क़दर कड़े वक़्त में भी इस्लाम पर उन की इस्तिक़ामत और इन होशरुबा मसाइब पर सब्र देखा तो नादिम हो कर अपने आप से कहने लगा : मैं ने इन (मुसल्मानों) से ज़ियादा बहादुर किसी को न देखा और येह मैं ने इन के साथ क्या

किया ? फिर उस ने छोटे भाई को लाने का हुक्म दिया और उसे अपने क़रीब कर के मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहानों से वरग़लाने लगा लेकिन वोह नौ जवान उस की चालबाज़ी में न आया और उस के पाए सबात में ज़र्रा बराबर लग़्ज़िश न आई, इतने में उस का एक दरबारी बोला : ऐ बादशाह ! अगर मैं इसे फुसला दूं तो मुझे इन्आ़म में क्या मिलेगा ? बादशाह ने जवाब दिया, ''मैं तुझे अपनी फ़ौज का सिपह सालार बना दूंगा । वोह दरबारी बोला : मुझे मन्ज़ूर है, बादशाह ने दरयाफ़्त किया : तुम इसे कैसे फुसलाओगे ? दरबारी ने जवाबन कहा : ऐ बादशाह तुम जानते हो कि अहले अ़रब औ़रतों में बहुत दिल चस्पी रखते हैं और येह बात सारे रूमी जानते हैं कि मेरी फ़ुलानी बेटी हुस्नो जमाल में यक्ता है और पूरे रूम में उस जैसी ह़सीना कोई और नहीं । तुम इस नौ जवान को मेरे ह़वाले कर दो मैं इसे और अपनी इस बेटी को तन्हाई में यकजा कर दूंगा और वोह इसे फुसलाने में काम्याब हो जाएगी । बादशाह ने उस दरबारी को **चालीस**40 **दिन** की मुद्दत दी और इस नौ जवान को उस के ह़वाले कर दिया, वोह दरबारी उसे ले कर अपनी बेटी के पास आया और सारा माजरा उसे कह सुनाया । लड़की ने बाप की बात पर अ़मल पैरा होने पर रिज़ा मन्दी का इज़्हार किया, वोह नौ जवान उस लड़की के साथ इस त़रह़ रहने लगा कि दिन को **रोज़ा** रखता रात भर **नवाफ़िल** में मश्ग़ूल रहता । यहां तक कि मुक़र्ररा मुद्दत ख़त्म होने लगी तो बादशाह ने उस लड़की के बाप से नौ जवान का ह़ाल दरयाफ़्त किया । उस ने आ कर अपनी बेटी से पूछा तो वोह कहने लगी कि मैं इसे फुसलाने में नाकाम रही येह मेरी त़रफ़ माइल नहीं हो रहा शायद इस की वजह येह है कि इस के दोनों2 भाई इस शहर में मारे गए और उन की याद इसे सताती है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (त-बरानी)

लिहाज़ा बादशाह से मोहलत में इज़ाफ़ा करवा लो और हम दोनों को किसी और शहर में पहुंचा दो । दरबारी ने सारा माजरा बादशाह को कह सुनाया । बादशाह ने मोहलत में इज़ाफ़ा कर दिया और इन दोनों[2] को दूसरे शहर पहुंचाने का हुक्म दे दिया । वोह नौ जवान यहां भी अपने मा'मूल पर क़ाइम रहा या'नी दिन में **रोज़ा** रखता और रात भर **इबादत** में मसरूफ़ रहता, यहां तक कि **जब मोहलत ख़त्म होने में तीन[3] दिन रह गए तो वोह लड़की बे ताबाना उस नौ जवान से अ़र्ज़ गुज़ार हुई : मैं तुम्हारे दीन में दाख़िल होना चाहती हूं और यूं वोह मुसल्मान हो गई ।** फिर उन्हों ने यहां से फ़िरार होने की तरकीब बनाई वोह लड़की अस्तबल से दो[2] घोड़े लाई और उस पर सुवार हो कर येह इस्लामी सल्तनत की त़रफ़ रवाना हो गए । एक रात उन्हों ने अपने पीछे घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी । लड़की समझी कि रूमी सिपाही उन का पीछा करते हुए क़रीब आ पहुंचे हैं । उस लड़की ने नौ जवान से कहा : आप उस रब عَزَّوَجَلَّ से जिस पर मैं ईमान ला चुकी हूं दुआ़ कीजिये कि वोह हमें हमारे दुश्मनों से नजात अ़ता फ़रमाए, **नौ जवान ने पलट कर देखा तो ह़ैरान रह गया कि उस के वोह दोनों[2] भाई जो शहीद हो चुके थे, फ़िरिश्तों के एक गरौह के साथ उन घोड़ों पर सुवार हैं । इस ने उन को सलाम किया फिर उन से उन के अह़वाल दरयाफ़्त किये वोह दोनों[2] कहने लगे : हम एक ही ग़ोते में जन्नतुल फ़िरदौस में पहुंच गए थे और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने हमें तुम्हारे पास भेजा है ।** इस के बा'द वोह लौट गए वोह नौ जवान उस लड़की के साथ मुल्के शाम पहुंचा और उस के साथ शादी कर के वहीं रहने लगा । इन **तीन[3] बहादुर शामी भाइयों** का क़िस्सा मुल्के शाम में बहुत मश्हूर हुवा और उन की शान में क़सीदे कहे गए जिन का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم **:** जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

एक शे'र येह है **:**

سَيُعْطِى الصَّادِقِينَ بِفَضْلِ صِدْقٍ

نَجَاةً فِى الْحَيَاةِ وَ فِى الْمَمَاتِ

तरजमा : अ़न्क़रीब **अल्लाह** तआ़ला सच्चों को सच की ब-र-कत से ज़िन्दगी और मौत में नजात अ़ता फ़रमाएगा।

(عُيُونُ الْحِكَايَات ص ١٩٨،١٩٧ دارالكتب العلمية بيروت)

अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! उन तीनों[3] शामी भाइयों ने ईमान पर इस्तिक़ामत का कैसा ज़बर दस्त मुज़ा-हरा किया, उन के दिलों में ईमान किस क़दर रासिख़ हो चुका था, येह इ़श्क़ के सिर्फ़ बुलन्द बांग दा'वे करने वाले नहीं ह़क़ीक़ी मा'ना में मुख़्लिस **आ़शिक़ाने रसूल** थे। दोनों[2] भाई जामे शहादत नोश कर के जन्नतुल फ़िरदौस की सर-मदी ने'मतों के ह़क़दार बन गए और तीसरे ने रूम की ह़सीना की त़रफ़ देखा तक नहीं और दिन रात रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ रहा और यूं जो ब निय्यते शिकार आई थी ख़ुद असीर बन कर रह गई ! **इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि मुश्किलात में सरकार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **से मदद चाहना और या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **! पुकारना अहले ह़क़ का क़दीम त़रीक़ा है।**

__या रसूलल्लाह__ के ना'रे से हम को प्यार है
जिस ने येह ना'रा लगाया उस का बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी

उस शामी नौ जवान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल और उस की ईमान पर इस्तिक़ामत मरह़बा ! ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! निगाहों के सामने दो[2] प्यारे प्यारे भाई जामे शहादत नोश कर गए मगर उस के पाए सबात को ज़रा भी लग़्ज़िश नहीं आई, न धम्कियां डरा सकीं न ही क़ैदो बन्द की सुऊ़बतें अपने अ़ज़्म से हटा सकीं, ह़क़्क़ो सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की काली काली घटाओं से बिल्कुल न घबराया, तूफ़ाने बला के सैलाब से उस के पाए सबात में जुम्बिश तक न हुई, ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ का शैदाई दुन्या की आफ़तों को बिल्कुल ख़ात़िर में न लाया। बल्कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहुंचने वाली हर मुसीबत का उस ने ख़ुश दिली के साथ ख़ैर मक़्दम किया, नीज़ दुन्या के माल और ह़ुस्नो जमाल का लालच भी उस के अ़ज़ाइम से उस को न हटा सका और **उस मर्दे ग़ाज़ी ने इस्लाम की ख़ात़िर हर त़रह़ की राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी।**

येह ग़ाज़ी येह तेरे पुर असरार बन्दे   जिन्हें तूने बख़्शा है ज़ौक़े ख़ुदाई
है ठोकर से दो[2] नीम सह़रा व दरिया   सिमट कर पहाड़ इन की हैबत से राई
दो[2] आ़लमे करती है बेगाना दिल को   अ़जब चीज़ है लज़्ज़ते आश्नाई
शहादत है मत़्लूबो मक़्सूदे मोमिन
न माले ग़नीमत न किश्वर कुशाई

आख़िरे कार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रिहाई के भी ख़ूब अस्बाब फ़रमाए। वोह रूमी लड़की मुसल्मान हो गई और दोनों[2] रिश्तए अज़्दवाज

में भी मुन्सलिक हो गए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप भी दोनों[2] जहां की सुर्ख़ रूई के तमन्नाई हैं तो आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस[10] दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

काश मैं गूंगा होता !

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़त़्ई जन्नती होने के बा वुजूद ज़बान की आफ़तों से बेह़द ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे चुनान्चे फ़रमाते हैं : काश मैं गूंगा होता मगर **ज़िक्रुल्लाह** की ह़द तक गोयाई (या'नी बोलने की सलाहिय्यत) ह़ासिल होती।

(مِرقاةُ الْمَفاتِیح ج١٠ ص٨٧ تحتَ الحدیث ٥٨٢٦)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net